1968G Jewels from Jain Agam

Jinagam ratnakar ke anmol ratn (In Divya Dhvani, February 1968)

जिनागम-रत्नाकर के कुछ अनमोल रत्न

—श्री पं० हीरालाल सिद्धान्त शास्त्री

यद्यपि जैन-समाज को जिनागम-रत्नाकर के अत्यन्त अनमोल रत्न सहज प्राप्त हैं, किन्तु कलि-काल के प्रभाव से कोई भी उसमें गोता लगाकर उन्हें निकालने का प्रयत्न नहीं करता है। सभी चाहते हैं, कि किसी जौहरी की दुकान पर ये अनमोल रत्न अल्प मूल्य या विना मूल्य के ही सहज में प्राप्त हो जावें। साधारण जड़ रत्नों की दुकान जौहरी या सराफा बाजार में होती हैं, तो चेतन आत्माराम को विभूषित करने वाले इन सूक्ति-रत्नों की दुकानें ग्रन्थ या पत्र-पत्रिकाएँ हैं। अतएव यही विचार कर विज्ञ-जन रूप गोताखोर उस रत्नाकर में गोते लगा-लगाकर और अपनी-अपनी पसन्द के रत्न निकाल कर कविता, कहानी, सैद्धान्तिक-चर्चा आदि के रूप में प्रेमी पाठक-ग्राहकों के लिए पत्र-पत्रिका रूप दुकानों में सजाकर प्रकाश में लाते रहते हैं और जिज्ञासु ग्राहक वर्ग सहज ही इन पत्र-पत्रिकाओं के बाजार में जाकर अपनी-अपनी रुचि के रत्न लेता रहता है।

मैं भी यही सोचकर जिनागम-रत्नाकर के कुछ अनमोल रत्न दिव्य-ध्वनि दुकान के माध्यम से जिज्ञासु रत्न-ग्राहक पाठकों के समक्ष पहुँचा रहा हूँ, और भविष्य में उक्त शीर्षक स्तम्भ के द्वारा पहुँचाता रहूँगा। आशा है कि प्रेमी पाठक अपनी पसन्द के रत्नों को ग्रहण कर और हार बनाकर हृदय में धारण करेंगे।

आचार्य सकलकीर्त्ति ने संस्कृत में श्री वर्धमान चरित की रचना की है। उसमें से कुछ श्लोक यहाँ हिन्दी अनुवाद के साथ दिये जाते हैं :—

स्थल है—छप्पन कुमारिक देवियों के प्रश्न और भगवान् की माता द्वारा उनके उत्तर

[१]

हितकृत्का इहामुत्र देवि योऽनन्तशर्मणे।
त्रिजगद्धित कर्त्रोश्च कर्ता चिद्धर्मयोः पुनः॥

प्रश्न—हे देवि! दोनों लोकों में हितकारी ौन है?

उत्तर—जो अनन्त सुख की प्राप्ति के लिये तीन गत को उपदेश दे, तथा जो धर्म का प्रवर्तक और ात्म स्वरूप का प्रतिपादक हो॥१॥

[२]

महागुरुर्गुरूणां को
यो गरीयान् जगत्त्रये।
सर्वैश्चातिशयैर्दिव्यै–
र्गुणैरन्तातिगैर्जिनेट्॥

प्रश्न—गुरुजनों का महान् गुरु कौन है?

उत्तर—जो तीनों लोकों में अपने दिव्य सर्व अतिशयों से और अनन्त गुणों से वरिष्ठ हैं, ऐसे जिनेन्द्रदेव ही गुरुओं के भी महान् गुरु हैं॥२॥

[३]

प्रामाण्यं सद्वचः कस्य
यः सर्वज्ञो जगद्धितः ।
निर्दोषो वीतरागश्च
तस्य नान्यस्य जातुचित् ।।

प्रश्न–किसके सद्वचन प्रामाणिक हैं ?

उत्तर–जो सर्वज्ञ है, जगद्-हितैषी है, निर्दोष है, वीतराग है, ऐसे आप्त के ही वचन प्रामाणिक हैं, अन्य किसी के भी नहीं ।।३।।

[४]

पीयूषमिव किं पेयं
जन्ममृत्युविषापहम् ?
जिनेन्द्रास्योद्भवं ज्ञाना–
मृतं दुश्चिद्विषं न च ।।

प्रश्न–अमृत के समान पान-योग्य और जन्म मृत्युरूप बिष को दूर करने वाली क्या वस्तु है ?

उत्तर–जिनेन्द्रदेव के मुख चन्द्र से प्रकट हुआ ज्ञानामृत ही पान करने के योग्य है, अन्य दुश्चित्त जनों के विषरूप वचन नहीं ।।४।।

[५]

किं ध्येयं धीमतां लोके
ध्यानं च परमेष्ठिनाम् ।
जिनागमं स्वतत्त्वं वा
धर्म्यशुक्लं न चापरम् ।।

प्रश्न—लोक में बुद्धिमानों को किसका ध्यान करना चाहिए ?

उत्तर—पंच-परमेष्ठियों का, जैन आगम का, आत्मतत्त्व का, धर्म और शुक्लध्यान का ध्यान करना चाहिए, अन्य किसी का नहीं ।।५।।

[६]

त्वरितं करणीयं किं
येन नश्यति संसृतिः ।
अनन्ता दृष्टि चिद्वृत्त–
यमादिकं न चापरम् ।।

प्रश्न—मनुष्य को तुरन्त क्या करना चाहिए ?

उत्तर—जिससे संसार का विच्छेद हो, ऐसे अनन्त दर्शन, ज्ञान, चारित्र और यम-नियम को धारण करना चाहिए, अन्य किसी को नहीं ।।६।।

[७]

सहगामी सतां कोऽत्र
धर्मबन्धुर्दयामयः ।
सर्वत्रापदि सन्त्राता
पापारिरपि नापरः ।।

प्रश्न—सज्जनों के साथ जाने वाला क्या है ?

उत्तर—दयामयी धर्म-बन्धु ही साथ जाने वाला है, वही सर्वत्र आपत्ति में संरक्षक है और पाप-विनाशक है, और कोई भी नहीं ।।७।।

[८]

धर्मस्य कानि कर्तृणि
तपो रत्नत्रयाणि च ।
व्रतशीलानि सर्वाणि
क्षमादि लक्षणान्यपि ।।

प्रश्न—धर्म करने वाले कौन-कौन कार्य हैं ?

उत्तर—तप, रत्नत्रय, व्रत, शील और उत्तम क्षमादि लक्षण वाले शुद्ध भाव ही धर्म करने वाले उत्तम कार्य हैं ।।८।।

[९]

धर्मस्य किं फलं लोके
या विश्वेन्द्र विभूतयः ।
सत्सुखं श्रीजिनादीनां
तत्सर्वं तत्फलं परम् ।।

प्रश्न—धर्म का क्या फल है ?

उत्तर–लोक में जो इन्द्र नागेन्द्र आदि की

याँ और तीर्थंकरादि के उत्तम सुख दृष्टि-
होते हैं, वे सभी धर्म के फल हैं ॥९॥

[१०]

लक्षणं कीदृशं धर्मि-
णामत्र शान्तता परा।
निरहङ्कारता शुद्ध-
क्रिया तत्परताऽनिशम् ॥

—धर्मात्मा पुरुषों का क्या लक्षण है ?
र—परम शान्ति, निरहंकारता और शुद्ध
ा रूप क्रियाओं के करने में निरन्तर तत्पर
धर्मात्मा का लक्षण है ॥१०॥

[११]

कानि पापस्य कर्तृणि
मिथ्यात्वादीनि खानि च।
कोपादीनि कुसङ्गानि
षोढाऽनायतनान्यपि ॥

-पाप को करने वाले कौन से कार्य हैं ?
—मिथ्यात्व, अविरति आदि इन्द्रिय-
सेवन, क्रोधादिक कषाय, कुसंग और
तन पापोपार्जन करने वाले कार्य

[१२]

पस्य किं फलं यच्चा-
मनोज्ञं दुःखकारणम् ।
तौ क्लेश रोगादि
निंद्यं सर्वं हि तत्फलम् ॥
ा का क्या फल है ?
ख का कारणभूत अनिष्ट वस्तु का
दुर्गति में उत्पन्न होना, रोग क्लेश
ार सभी निंद्य वस्तुओं का समागम
ा फल है ॥१२॥

[१३]

पापिनां लक्षणं कीदृग्-
विधं तीव्रकषायता ।
परनिन्दाऽऽत्मप्रशंसादि
रौद्रत्वादीति तत्परम् ॥

प्रश्न–पापी पुरुषों के क्या लक्षण हैं ?
उत्तर–तीव्र कषाय होना, पराई निन्दा करना, अपनी प्रशंसा करना और हिंसा आदि रौद्र कार्यों को करना, ये सब पापी पुरुषों के लक्षण हैं ॥१३॥

[१४]

कोऽलोभी सर्वदा योऽत्र-
क धर्मं भजते सुधीः ।
मुमुक्षुर्विमलाचारै—
स्तपोयोगैश्च दुष्करैः ॥

प्रश्न–अलोभी पुरुष कौन है ?
उत्तर—जो बुद्धिमान् यहाँ पर एक मात्र धर्म का ही सेवन करता है, मुमुक्षु है, अपने निर्मल आचार से, तथा दुष्कर तपोयोग से अपने आपको पवित्र रखता है वहा पुरुष अलोभी है ॥१४॥

[१५]

विवेकी कोऽत्र यो वेत्ति
विचारं निस्तुषं हृदि ।
देवशास्त्र गुरूणां च
धर्मादीनां न चापरः ॥

प्रश्न–इस लोक में विवेको पुरुष कौन है ?
उत्तर–जो अपने हृदय में देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति पूजारूप, तथा धर्मादिक के आचरण रूप शुद्ध विचार हृदय में रखता है, वही पुरुष विवेकी है, अन्य नहीं ॥१५॥

[१६]

को धर्मी यो युतः सारैः
क्षमाद्यैर्दशलक्षणैः ।

जिनाज्ञापालको धीमान्
व्रतो ज्ञानी न चापरः ॥

प्रश्न–धर्मात्मा पुरुष कौन है ?

उत्तर–जो संसार में सारभूत क्षमादिक दश लक्षण धर्म से युक्त है, जिन-आज्ञा का पालक है, ज्ञानी, व्रती और बुद्धिमान है, वही पुरुष धर्मात्मा है, अन्य नहीं ॥१६॥

[१७]

किममुत्र सुपाथेयं
यत्पुण्यं निर्मलं कृतम् ।
दानपूजोपवासाद्यं—
व्रतशील यमादिभिः ॥

प्रश्न–परलोक ले जाने के लिए उत्तम पाथेय (मार्ग भोजन) क्या है ?

उत्तर–दान, पूजा, उपवास आदि से, तथा व्रत, शील और संयमादिक धारण करने से जो निर्मल पुण्य उपार्जन किया है, वही परलोक जाने के लिए उत्तम पाथेय है ॥१७॥

[१८]

सफलं जन्म कस्येह
येनाऽऽप्ता बोधिरुत्तमा ।
मुक्तिश्री सुखमाता च
तस्य नान्यस्य जातुचित् ॥

प्रश्न–इस संसार में किसका जन्म सफल है ?

उत्तर–जिस पुरुष ने उत्तम बोधि को प्राप्त किया है, मुक्ति श्री रूप उत्तम सुखमयी माता जिसे मिली है, उसी का जन्म सफल है, अन्य किसी का भी नहीं ॥१८॥

[१९]

कः सुखी जगतां मध्ये
सर्वोपधिविवर्जितः ।
ज्ञानध्यानामृतस्वादी
वनवासी न चापरः ॥

प्रश्न–इस जगत् में कौन सुखी है ?

उत्तर–जो सर्व प्रकार की उपधि (परिग्रह) से रहित है, ज्ञान-ध्यानरूप अमृत का आस्वादी और वनवासी है, वही पुरुष सुखी है ॥१९॥

[२०]

चिन्ता क्वात्र विधेयाऽहो
कर्मारीणां विघातने ।
साधने मुक्तिलक्ष्म्याश्च
नान्यत्र खादिशर्मणि ॥

प्रश्न—चिन्ता किस विषय में करनी चाहिए ?

उत्तर—कर्म रूपी शत्रुओं के विनाश करने में, तथा मुक्तिरूपी लक्ष्मी के साधन में ही चिन्ता करनी चाहिए । अन्य इन्द्रियादि के सुख में चिन्ता नहीं करनी चाहिए ॥२०॥

[२१]

क्व विधेयो महान् यत्नः
पालने शिवदायिनाम् ।
रत्नत्रयतपोयोग–
ज्ञानादीनां न सम्पदाम् ॥

प्रश्न–किस विषय में महान् यत्न करना चाहिए ?

उत्तर–मोक्ष देने वाले रत्नत्रय के धारण करने में, तप में, योग में और ज्ञानादिक के उपार्जन में महान् प्रयत्न करना चाहिए । सांसारिक सम्पदाओं के लिये नहीं ।.२१॥

[२२]

कः सुहृत्परमः पुंसां
यो बलात्कारयेद् वृषम् ।
तपो दानं व्रतादीनि
दुराचारं निवार्य च ॥

प्रश्न—पुरुषों का परम मित्र कौन है ?

उत्तर–जो हठपूर्वक धर्म करावे, और दुराचार को निवारण करे, सत्य, दान और व्रतादिक को करावे, वही परम मित्र है ॥२२॥

[२३]

कः शत्रुर्विषमो योऽत्र
तपो-दीक्षाव्रतादिकान् ।
हितान् ददाति नादातुं
स शत्रुः स्वान्ययोः कुधीः ॥

प्रश्न–मनुष्यों का विषम शत्रु कौन है ?

उत्तर—जो यहाँ पर आत्म हितकारी तप, दीक्षा और व्रतादिक को ग्रहण न करने देवे, वह कुबुद्धि अपना और अन्य का महान् शत्रु है ॥२३॥

[२४]

किं श्लाघ्यं यन्महद्दानं
सुक्षत्रेऽल्पधनान्वितैः ।
तपो वा दुर्बलाङ्गैर्यत्
क्रियतेऽनघमूर्जितम् ॥

प्रश्न—संसार में प्रशंसनीय क्या कार्य है ?

उत्तर–अल्प धनवान् हो करके भी जो उत्तम क्षेत्र में महान् दान देवे तथा दुर्बल शरीर वाला होकर के भी जो निर्दोष उग्र तप करे, वही परम प्रशंसनीय कार्य है ॥२४॥

[२५]

त्वत्समा का महादेवी
महादेवं जगद्गुरुम् ।
सूते या धर्मकर्तारं
मत्समा सा न चापरा ॥

प्रश्न—हे मातः ! तेरे समान और कौन महादेवी है ?

उत्तर–जो धर्मतीर्थ के करने वाले, जगत् के गुरु ऐसे महा पुरुष को पैदा करे, वह मेरे समान है, अन्य स्त्री नहीं ॥२५॥

[२६]

किं पाण्डित्यं श्रुतं ज्ञात्वा
यद्दुराचारदुर्मदम् ।
मनाङ् न क्रियतेऽन्यद्वा
पापहेतु क्रियादिकम् ॥

प्रश्न–पांडित्य क्या है ?

उत्तर–जो श्रुत (शास्त्र) को जान करके दुराचार, दुर्मद और पाप के कारणभूत अन्य कोई भी खोटी क्रिया रंचमात्र भी न करे, वही पांडत्य है ॥२६॥

[२७]

किं मूर्खत्वं परिज्ञाय
यज्ज्ञानं हितकारणम् ।
तपो धर्मक्रियाऽऽचारं
निष्पापं न विधीयते ॥

प्रश्न—मूर्खता क्या है ?

उत्तर–जो हिताहित को जान करके भी आत्महित कारक, निर्दोष तप, धर्म, क्रिया और आचरण को न करे, यही मूर्खता है ॥२७॥

[२८]

के चौराः दुर्धराः पुंसां
धर्मरत्नापहारिणः ।
पञ्चाक्षाः पापकर्त्तारः
सर्वानर्थविधायिनः ॥

प्रश्न–पुरुषों के दुर्धर चोर कौन हैं ?

उत्तर–धर्मरूप रत्न के अपहरण करने वाले, पाप के करने वाले और सर्व अनर्थों के विधायक ऐसे पाँच इन्द्रियों के विषय ही दुर्धर चोर हैं ॥२८॥

[२९]

के शूरा ये जयन्त्यत्र
परीषहमहाभटान् ।

धैर्यासिना कषायारीन्
स्मरमोहादिशत्रवान् ॥

प्रश्न–शूरवीर कौन कहलाते हैं ?

उत्तर–जो इस लोक में धर्मरूप खड्ग के द्वारा परीषह रूप महा भटों को, कषायरूप शत्रुओं को और काम, मोह आदि अरियों को जीतते हैं, वे ही शूरवीर कहलाते हैं ॥२९॥

[३०]

को देवोऽखिल वेत्ता यो
दोषाष्टादश दूरगः ।
अनन्तगुणवाराशि–
र्धर्मकर्त्ता परो न च ॥

प्रश्न–सच्चा देव कौन है ?

उत्तर—जो सर्व पदार्थों का वेत्ता हो, अठारह दोषों से रहित हो, अनन्त गुणों का सागर हो और धर्म तीर्थ का कर्त्ता हो, वही सच्चा देव है, अन्य कोई नहीं ॥३०॥

[३१]

को महान् गुरुरेवात्र
यो द्विधासंगवर्जितः ।
जगद्भव्यहितोद्युक्तो
मुमुक्षुर्नापरः क्वचित् ॥

प्रश्न–महान् गुरु कौन है ?

उत्तर–जो अन्तरंग और बहिरंग दोनों प्रकार के परिग्रह से रहित हो, जगत् के भव्य जीवों के हित करने में उद्यत हो और मुक्ति का इच्छुक हो, वही महान् गुरु है, अन्य कोई महान् गुरु नहीं हो सकता है ॥३१॥